ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

Sahitya Vithika

Peer Reviewed Bilingual Bi-Annual Reserach Journal

(अर्धवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

वर्ष : 3 अंक : 5 दिसम्बर : 2014

1	मृदुला गर्ग के उपन्यासों में नारी चेतना	16

संपादक

डॉ. दिलीप मेहरा

ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

वर्ष : 3 अंक : 5 दिसम्बर : 2014

संपादक
डा. दिलीप मेहरा
❖
परामर्शक
डा. पारुकान्त देसाई
डा. दयाशंकर
डा. सुरेश गढवी
प्रो. जे. के. सिंह
❖
: संरक्षक :
डा. मालती दुबे
डा. मनोज पटेल
❖
सम्पादक मण्डल
डा. शिवप्रसाद शुक्ल
डा. प्रेमचन्द कोराली
डा. खन्नाप्रसाद अमीन
श्री के. एस. मेहरा
❖
कला सज्जा : प्रा. सहदेव लुहार
❖

व्यवस्थापकीय पता
शोभा मेहरा
बी-३, नीलकंठ बंग्लोज़,
पंचायत अस्पताल रोड़,
नानाबाजार, वल्लभविद्यानगर,
गुजरात-388120
E-mail : mehradilip52@gmail.com
सचलभाष-9426363370

Peer reviewed bilingual
bi-annual research journal

पत्रिका में प्रकाशित कविता, लेखादि में अभिव्यक्त विचारों से प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवादों के लिए न्यायालय का क्षेत्र आणंद, गुजरात होगा।

सदस्यता शुल्क
वार्षिक 200 रुपये
पंचवार्षिक 900 रुपये
आजीवन 2000 रुपये
❖
संस्था के लिए
वार्षिक 300 रुपये
आजीवन 3000

अनुक्रमणिका

	संपादकीय	-डा. दिलीप मेहरा	2
1	डा. शिवकुमार मिश्र का भक्ति काव्य संबंधी मूल्यांकन	-प्रो. दयाशंकर	3
2	कबीर की वाणी में मानवाधिकार	-डा. पुष्पा रानी	10
3	हिन्दी आत्मकथा की परम्परा और दलित सौंदर्य शास्त्र	-निर्मल रानी	13
4	मृदुला गर्ग के उपन्यासों में नारी-चेतना	-अनु सुदामा पाण्डेय	16
5	किरनचन्द्र शर्मा के नाटकों की मूल संवेदना	-विनीता पंडित	19
6	दलित विमर्श और सुशीला टांकभौरे का 'नीला आकाश'	-संगीता चौहान	23
7	'वे दिन' उपन्यास में कथ्य और शिल्प	-डा. कल्याणभाई परमार	26
8	दोहरी मुक्ति के संघर्ष की कथा : 'दोहरा अभिशाप'	-डा. सुशीला व्यास	28
9	समकालीन बंधुत्व के कवि रहमान अली 'रहमान'	-डा. शिव प्रसाद शुक्ल	31
10	मृदुला गर्ग का उपन्यास : 'उसके हिस्से की धूप'	-प्रो. जे. बी. पटेल	33
11	दुष्यन्त कुमार की गज़लों में संवेदना	-डा. नागसेन श्रीमाली	36
12	'काला पहाड़' उपन्यास में भारतीय संस्कृति का चित्रण	-हेरमा स्पल के.	37
13	'ठीकरे की मँगनी' : नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में	-मौर्य राखी कुमारी एम.	38
14	मृदुला गर्ग के कहानी साहित्य में मनोवैज्ञानिक दर्शन	-डा. इल्यास आर जेठवा	40
15	आधुनिक भारत के गाँवों की वास्तविकता का बखान	-डा. आरिफ महात	43
16	नयी नदी बहती है गुमसुम (समीक्षा)	-हरिमोहन	45
17	राही मासूम रज़ा : जीवन एवं रचना संसार	-जगमोहन	46
18	नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	-डा. दिलीप मेहरा	49
19	प्रकृति और पुरुष का कायान्तरण : 'फिर मिलेंगे'	-डा. विनोद कुमार त्रिपाठी	52
20	'एक स्वप्नदर्शी की मौत' : एक जागृत आदमी की संघर्ष कथा	-डा. बी. बी. वाघेला	54
21	'ग्लोबल गाँव के देवता' : आदिवासी शोषण का दारुण चित्रण	-डा. खन्नाप्रसाद अमीन	57
22	आग़ा 'हश्र' काश्मीरी और 'सीता बनवास'	-रवीन्द्र अमीन	60
23	भारतीय चिंतन परंपरा	-डा. गोविन्द के. नंदाणिया	63
24	नागार्जुन की कविता में प्रगतिवादी चेतना	-दिनेश जी. सोलंकी	67
25	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में दलित चेतना	-डा. दीपिका दवे	69
	विविध		
26	गुलों की तपीश से गुलज़ार गीतों का देश (निबन्ध)	-डा. अभय परमार	71
27	मौताणा : सामाजिक दुषण	-लोकेश कुमार मीणा	74
28	जन्मभूमि छोड़ने की वेदना : मलक	-योगेशचन्द्र पटेल	75
29	विनोबा जी की हिन्दी सेवा	-प्रा. अमीबहन भट्ट	76
30	'अर्पिता' उपन्यास में दलित चेतना	-डा. मानसिंह चौधरी	78
31	आदिवासी अकादमी तेजगढ़ : विश्व के नक्शे में	-राजेश राठवा	81
32	महिला के प्रति अपराध एवं मानवाधिकार	-डा. जयसिंह बी. झाला	84
33	कालिदास की कृतियों में प्रयुक्त मङ्गलश्लोक	-डा. विजयानन्द जी. पटेल	86
34	कसौटी	-डा. शिवप्रसाद शुक्ल	88
35	Naipaul's Half-a-Life: A Quest for Identity	-Dr. Mukund L. Revadivala	90
36	WRITING THE DIASPORIC SENSIBILITY: RAYMOND PILLAI AS A WRITER :OF DISPORIC CONSCIOUSNESS	- Jani Maheshkumar G.	92
37	Stress & Health	- Dr. R.K.Dodiya	94

❋ काव्य सृष्टि ❋

डा. खन्ना प्रसाद अमीन	पृ. 12/77	डा. वीणा अग्रवाल	पृ. 15
डा. दिलीप मेहरा	पृ. 22	डा. पंकज लोचन सहाय	पृ. 34
रहमान अली 'रहमान'	पृ. 42	हरपाल सिंह 'अरुष'	पृ. 48
डा. धीरजभाई वणकर	पृ. 59	प्रमलेश शुक्ला	पृ. 66
डा. भगवानदास कहार	पृ. 70	विनीता पंडित	पृ. 80

सम्पादकीय

'साहित्य वीथिका' का पाँचवाँ अंक पाठकों को समर्पित करते हुए हर्ष और विषाद दोनों का अनुभव हो रहा है। साहित्य में लोकतंत्र बहुत पहले आ गया जबकि समकालीन लोक जीवन में सत्ता, धर्म राजनीति और जाति की ओट में लोक तंत्र को कुचला जा रहा है। 'उसने कहा था' कहानी का नायक लहना सिंह हो या 'गोदान' का होरी हो या कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' की विडंबना हो, लेकिन चाय बेचने वाला क्षेत्रीय पार्टियों को तोड़ तोड़कर राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ा रहा है। बौधिक स्तर पर लोकतांत्रिक होना अलग बात है जबकि सार्वजनिक जीवन में लोकतांत्रिक होना बिलकुल अलग है। इक्कीसवीं शताब्दी दलितों आदिवासियों की है, लेकिन इनके नाम पर सुखसुविधा भोगने वालों को कभी बख्सा नहीं जायेगा। साहित्यिक लोकतंत्र सार्वभौमिक पक्षधरता का हिमायती है। मंडल से कमंडल, कमंडल से कमल और कमल से लोकतांत्रिक परिवर्तन इक्कीसवीं शताब्दी की मांग है या लोकतंत्र के अतीत पर घडियाल आँसू बहाने का मौका। जो भी हो काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'उपसंहार' मोदी को जाने अनजाने चुनाव के पहले कृष्ण से तुलना करने के लिए मजबूर कर दिया। फिल हाल भारतीय ज्ञानपीठ का पुरस्कार केदारनाथ सिंह के झोले में गया। हालाकि तरह तरह के तर्क वितर्क साहित्यकारों के बीच में चर्चित हैं। किसी पुरस्कार विशेष से रचनाकार की हैसियत का पता नहीं चलता, फिलहाल भारत भारती पुरस्कार में बाजी मारी हमारे दूधनाथ सिंह ने। इस बार साहित्य अकादमी पुरस्कार से रमशेचन्द्र शाह को नवाजा गया। इसलिए केदारनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह एवं रमेश चंद्र शाह को 'साहित्य वीथिका' परिवार की ओर से कोटि कोटि शुभेच्छाएँ प्रस्तुत की जा रही हैं। हिन्दी साहित्य की जन प्रतिबद्धता जग जाहिर है इसीलिए 'साहित्य वीथिका' का मुख पृष्ठ आदिवासी संस्कृति और सभ्यता से ओतप्रोत है। आदिवासी, सभ्यता, संस्कृति और भाषा को बरकरार रखने के लिए डा. गणेश देवी ने गुजरात के छोटाउदयपुर आदिवासी क्षेत्र के तेजगढ़ गाँव में 'आदिवासी अकादमी' की स्थापना की है जिसका चित्र 'साहित्य वीथिका' के मुखपृष्ठ पर है तेजगढ़ आज आदिवासी भाषा, कला, और संस्कृति को सँवारने का केन्द्र बन चुका है। कई महान साहित्यकार और भाषाविदों उसकी मुलाकात ले रहे हैं ज्यादा जानकारी के लिए इस में संकलित राजेश राठवा के लेख पढ़ना जरूरी है। महुआ माजी के शब्दों में कहें तो जल, जंगल और जमीन का सबसे बड़ा रक्षक आदिवासी ही है। पर्यावरण असंतुलन को नियंत्रित करने में आदिवासियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए प्रकृति और पुरुष के सामंजस्य को बरकरार रखने में पर्यावरण नियंत्रण बोर्ड की अपेक्षा जन सामान्य की आंतरिक और बाह्य मनः स्थिति को बुनियादी तौर पर परिवर्तित करना अनिवार्य है।

- डा. दिलीप मेहरा

लेखकों से

- शोधालेख के साथ-साथ अपना कार्यालयीन एवं आवासीय पूरा पता पिनकोड सहित अपने दूरभाष तथा सचलभाष का क्रमांक अवश्य लिखने का कष्ट करें ताकि तुरन्त ही प्राप्ति/स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना दी जा सके।
- विशेषांक के सम्बन्ध में अग्रिम जानकारी दी जायेगी।
- शोधालेख में संशोधन का अधिकार सम्पादक का होगा। शोधालेख के साथ प्रमाण पत्र अवश्य भेजें कि-'यह मेरा मौलिक एवं सर्वथा अप्रकाशित शोधालेख है। इसके तथ्यों की प्रमाणिकता एवं सन्दर्भ समीचीन हैं।'
- लेखकों एवं पाठकों को अंक कैसा लगा? इस सम्बन्ध में आपके विचार अवश्य भेजें, जिस से हमारी त्रुटियों की जानकारी मिलेगी और भावी योजना बनाने में हमें सहायता मिलेगी।
- सदस्यता शुल्क, सहयोग-राशि, संरक्षक-राशि एवं प्रकाशनार्थ सारी सामग्री निम्नांकित पते पर भेजें।
- आपका शोधालेख रीसर्च कमिटि में चयन होने के बाद प्रकाशित होगा। आपके द्वारा भेजे गए आलेख को लौटाया नहीं जायेगा, इसलिए आप अपने पास आलेख की फोटोकोपी जरुर रखें।
- सदस्यता शुल्क चेक/डी.डी. से भेज सकते हैं या शोभाबहन दिलीप मेहरा खाता क्रमांक-01830100004023 (बेंक आफ बडौदा) में राशि जमा करके फोन या मेइल से कार्यालय में जानकारी दे।

डा. दिलीप मेहरा
संपादक